B.A-II Paper-IV

(1) Q- कंसवहो काव्य के रचयिता राम पाणिवाद का जीवन काल का समय प्रस्तुत करें।

Ans- कंसवहो काव्य के रचयिता- रामपाणिवाद मलावर प्रदेश के नम्बियम जाति के थे। इनका व्यवसाय नाटक प्रदर्शन के समय मरज या मृदंग बजाना था। यही यथार्थतः पाणिवाद नामक जाति का है। कवि साहित्य और नृत्य कला की परम्परा से सुपरिचित था।

कवि का जन्म - कवि का जन्म ई० सन 1707 के लगभग दक्षिण मलावर के एक ग्राम में हुआ था। बाल्यकाल में उसने अपने पिता की शिक्षा प्राप्त की थी। अनन्तर उस समय एक प्रसिद्ध विद्वान नारायणभट्ट से काव्य साहित्य की शिक्षा प्राप्त की। विद्वान कवि होने के अनन्तर ये उत्तर मलावर के कोलतिरि राजा के आश्रय में चले गये। राजा उन दिनों अपने पड़ोसी राजा से युद्ध करने में उलझ हुआ था, अतएव कवि की ओर विशेष ध्यान न दे सका। राजा की इस उदासीनता से कवि को पर्याप्त मानसिक क्लेश हुआ जिसका वर्णन निम्नलिखित पद्य में किया है -

कोलनृपस्य नगरे वासरा हरिवासराः।
मशकैः मत्कुणैश्चापि रात्रयः शिवरात्रयः॥

अर्थात - कोल नरेश के नगर में मेरे सभी दिन उपवास में बीतते थे और रात्रियाँ मच्छरों तथा खटमलों के कारण शिवरात्रि के समान जागरण करते हुए व्यतीत होती थी।

यहाँ से चलकर ये क्रमशः राजा वीरराय, कोचीन के एक ताल्लुकेदार मुरियनाडु

चेम्पक केसरी के राजा देवनारायण, वीरराय वीरमार्तण्डवर्मा एवं कार्तिक तिरुनाल आदि राजाओं के आश्रय में रहे। इनकी मृत्यु सम्भवतः पक्षाघात के कारण ई० सन 1775 के लगभग हुई थी।

कवि यावज्जीवन ब्रह्मचारी रहा, संस्कृत, प्राकृत और मलयालम इन तीनों भाषाओं में उसने समान रूप से रचनाओं का प्रणयन किया है।

कवि की रचना - संस्कृत में इनके चार नाटक, तीन काव्य और पाँच स्तोत्र ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इनके दो टीका ग्रन्थ भी मिले हैं।

~~मलयाम~~ मलयालम में इनकी बहुत सी रचनाएँ हैं जिनमें - कृष्ण चरित, शिशुपाल, पंचतन्त्र एवं रुक्मांगद चरित विख्यात हैं।

प्राकृत भाषा का कवि महान पण्डित है इन्होंने वररुचि के प्राकृत प्रकाश पर "प्राकृतवृत्ति" नामक टीका लिखी है तथा दो खण्ड काव्य (1) कंसवहो (2) उषानिरुद्ध।

अतः कंसवहो कवि का सभी उल्लेख बहुत महत्वपूर्ण रहा है - जो ~~अ~~ अनेक ग्रन्थों में अपना स्थान रखते।

B.A–II Paper – IV

37

(Q)– कंसवहो काव्य के रचयिता राम पाणिवाद का जीवन काल का समय प्रस्तुत करें।

Ans– कंसवहो काव्य के रचयिता– रामपाणिवाद मलावर प्रदेश के नम्बियार जाति के थे। इनका व्यवसाय नाटक प्रदर्शन के समय मरज या मृदङ्ग बजाना था। यही यथार्थतः पाणिवाद नामक जाति का है। कवि साहित्य और नृत्य कला की परम्परा से सुपरिचित था।

कवि का जन्म – कवि का जन्म ई० सन 1707 के लगभग दक्षिण मलावर के एक ग्राम में हुआ था। बाल्यकाल में उसने अपने पिता से शिक्षा प्राप्त की थी। अनन्तर उस समय एक प्रसिद्ध विद्वान नारायणभट्ट से काव्य साहित्य की शिक्षा प्राप्त की। विद्वान कवि होने के अनन्तर ये उत्तर मलावर के कोलतिरि राजा के आश्रय में चले गये। राजा उन दिनों अपने पड़ोसी राजा से युद्ध करने में उलझा हुआ था, अतएव कवि की ओर विशेष ध्यान न दे सका। राजा की इस उदासीनता से कवि को पर्याप्त मानसिक क्लेश हुआ जिसका वर्णन निम्नलिखित पद्य में किया है।–

कोलनृपस्य नगरे वासरा हरिवासराः।
मशकैः मत्कुणैश्चापि रात्रयः शिवरात्रयः॥

अर्थात्– कोल नरेश के नगर में मेरे सभी दिन उपवास में बीतते थे और रात्रियाँ मच्छरों तथा खटमलों के कारण शिवरात्रि के समान जागरण करते हुए व्यतीत होती थी।

यहाँ से चलकर ये क्रमशः राजा वीरराय, कोचीन के एक ताल्लुकेदार मुरियनाडु,

38

चेम्पक केसरी के राजा देवनारायण, वीर राय वीरमार्तण्डवर्मा एवं कार्तिक तिरुनाल आदि राजाओं के आश्रय में रहे। इनकी मृत्यु सम्भवतः पागल कुत्ते के काटने ई० सन 1775 के लगभग हुई थी।

कवि यावज्जीवन ब्रह्मचारी रहा, संस्कृत, प्राकृत और मलयालम इन तीनों भाषाओं में उनने समान रूप से रचनाओं का प्रणयन किया है।

कवि का रचना – संस्कृत में इनके चार नाटक, तीन काव्य और पाँच स्तोत्र ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इनके दो टीका ग्रन्थ भी मिले हैं।

~~मलयाल~~ मलयालम में इनकी बहुत सी रचनाएँ हैं जिनमें – कृष्ण चरित, शिशुपाल, पंचतन्त्र एवं रुक्मांगद–चरित विख्यात हैं।

प्राकृत भाषा का कवि महान पण्डित है इन्होंने वररुचि के प्राकृत प्रकाश पर "प्राकृतवृत्ति" नामक टीका लिखी है तथा दो खण्ड काव्य (1) कंसवहो (2) उषानिरुद्ध।

अतः कंसवहो कवि का सभी उल्लेख बहुत महत्वपूर्ण रहा है – जो ~~अनेक~~ ग्रन्थों में अपना ग्रन्थ लिखे।